Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 10/July/2024 IJRAW: 2024; 3(8):154-156 Accepted: 17/August/2024

किशनगढ़ में मार्बल व्यवसायी का इतिहास व वर्तमान दशा

[*1]डॉ. रामस्वरूप साहू, [2]डॉ. भंवर लाल, [3]हेमन्त धवल और [4]डॉ. विजय बाजिया

[*1]प्राचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन, म.द.स. विश्वविधालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

[2]सहायक आचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन, म.द.स. विश्वविधालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

[3]फाइन आर्ट सह-आचार्य, डी.एम.एस स्कुल, आर.आई.ई इंस्टिट्यूट, अजमेर, राजस्थान, भारत।

[4]राजकीय महाविधालय, कुचामन सिटी, राजस्थान, भारत।

सारांश

भारत देश की आज़ादी के बाद किशनगढ़ शहर लोकप्रिय हो गया। यह देश की सबसे बड़ी संगमरमर मंडियों में से एक है। इस क्षेत्र में एक हजार से अधिक ग्रामोद्योग उद्योग हैं। कच्चे पत्थर के खनन से लेकर कटर, चमकाने और फिनिशिंग तक के लिए शहर में सभी संसाधन उपलब्ध हैं। भारत और अन्य देशों में प्रतियोगियों के साथ-साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए। शहर और आसपास के एक लाख से अधिक लोग हैं, जो इस व्यवसाय पर जीवित हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मार्बल व्यवसाय पर एतिहासिक वर्तमान इतिहास को देखते हुए चर्चा की गयी है।

मुख्य शब्द: क़टर, गैग्सा, मार्बल, खनन, मार्बल स्लेव तथा मार्बल प्लेट आदि।

प्रस्तावना

राजस्थान का अजमेर धार्मिक रूप से विश्व के पटल पर खास पहचान रखता है। किशनगढ़ वर्तमान में मार्बल नगरी के रूप में विश्व भर में विख्यात है। किशनगढ़ मार्बल मंडी कारोबार देश ही नहीं विदेश में भी अपनी धाक रखता है। किशनगढ़ मार्बल मंडी की शुरुआत 50 साल पहले हुई थी। इसे एशिया की सबसे बड़ी मार्बल मंडी के नाम से भी जाना जाता है। यह मार्बल मंडी आज हर दिन 15 करोड़ का करोबार कर रहा है और एक लाख लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। चिप्स और क्रेजी की छोटी यूनिट से हजारों रुपए से शुरू हुआ ये कारोबार अपने शिखर पर है। आज किशनगढ़ मार्बल मंडी अजमेर जिले की आर्थिक रूप से रीढ़ बनकर खड़ा हुआ है। इस मंडी से राज्य सरकार भी करोड़ों रुपए का राजस्व अर्जित कर रही है। समय के साथ तमाम चुनौतियों का सामना करने के बाद भी इस कारोबार के जरिए हर दिन 1 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल रहा है। अजमेर जिले में मार्बल सिटी किशनगढ़ एनएच-8 पर स्थित है जो कि इसके लिए सबसे बड़ा वरदान भी साबित हुआ है।

साहित्यावलोकन

ओ.पी. शर्मा द्वारा लिखित शोध 'मार्बल स्टोन एंड वर्कर कंडीशन' में किशनगढ़ के मार्बल व्यवसाय का उल्लेख किया गया है। Sharma, O.P.: Marble stone and worker condition thesis awarded by University of Rajasthan, Jaipur.

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना प्रस्तुत की गयी है किशनगढ़ में मार्बल व्यवसाय के वर्तमान व एतिहासिक दशा स्थिति पर। किशनगढ़ के मार्बल व्यवसाय का विश्व स्तर पर प्रभाव को स्पष्ट व पुष्टिकरण की परिकल्पना की गयी है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र "किशनगढ़ में मार्बल व्यवसाय का इतिहास व वर्तमान दशा" किशनगढ़ में किशनगढ़ के मार्बल व्यवसाय पर विवरण प्रस्तुत करना है। शोध को इतिहास विषय से जोड़ते हुए वर्तमान स्थिति के परिपेक्ष्य पर तैयार किया गया है। मार्बल व्यवसाय की उत्पति एवं विकास पर विवरण प्रस्तुत किया गया है। मार्बल व्यवसाय की वर्तमान दशा प्रस्तुत करते हुए उसकी चुनातियो, रोजगार में योगदान तथा सरकार का मार्बल व्यवसाय के प्रति नजरिया की चर्चा की गयी है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु द्वितीयक स्त्रोतो के रूप में बुक, शोध-पत्र, न्यूज पेपर व ऑनलाइन साईट का प्रयोग किया गया है। सर्वे व साक्षात्कार विधि का प्रयोग करते हुए आवश्यक जानकारी का संग्रहण किया गया है।

***Corresponding Author:** डॉ. रामस्वरूप साहू

किशनगढ़ का सामान्य इतिहास

किशनगढ़ राज्य की स्थापना 1609 ई. में जोधपुर के राजकुमार किशनसिंह ने की थी। ब्रिटिश राज के समय किशनगढ़ एक रियासत थी। किशनगढ़ का इतिहास बहुत पुराना है, जो ब्रिटिश राज और मुगलों के समय से जुड़ा हुआ है। किशनगढ़ राज्य का नेतृत्व करने वाले सरदार जोधपुर के उदय सिंह के वंशज राजपूतों के राठौड़ वंश से थे। 1596 में, उनके दूसरे बेटे को अकबर से हिंडौन (अब जयपुर में) जिला मिला, और बाद में उन्हें सेठोलाव और कुछ अन्य जिले दिए गए। शहर के रूप में किशनगढ़ की स्थापना उन्होंने 1611 में की थी, और राज्य को भी यही नाम दिया गया। राजपूताना एजेंसी में स्थित किशनगढ़ ब्रिटिश राज के दौरान रियासत की राजधानी बन गया था। किशनगढ़ का क्षेत्रफल लगभग 2210 वर्ग किमी या 858 मील तक फैला हुआ था। 1900 में महाराजा मदन सिंह ने राज्य को संभाला और सोलह वर्ष की आयु में राजा बन गए उनके शासन काल में प्रशासन को व्यापक रूप से सराहनीय माना गया। स्थिति को नियंत्रित करने के उनके प्रयासों में तालाबों और कुओं से सिंचाई का विस्तार और कपास दबाने और ओटने के लिए कारखानों की स्थापना जैसे उपाय शामिल थे। बृजराज सिंहजी किशनगढ़ में महाराजाओं के वर्तमान वंशज हैं।

किशनगढ़ का वर्तमान स्वरूप

वर्तमान में किशनगढ़ राजस्थान राज्य के अजमेर जिले में स्थित एक नगर है। किशनगढ़ इसी नाम की तहसील का मुख्यालय भी है। किशनगढ़ अजमेर से 18 किमी पूर्वोत्तर और जयपुर से 102 किमी दक्षिणपश्चिम में स्थित है। वर्तमान समय में यह राजस्थान की 'मार्बल नगरी' के नाम से विख्यात है। किशनगढ़ की कला की नगरी भी कहा जाता है जिसकी 'बणी-ठणी' कलाकृति विश्व प्रसिद्ध है। मार्बल औघोगिक क्षेत्र से रोजाना हजारों मीटर मार्बल और ग्रेनाइट स्लेरी निकलती है जो अनुपयोगी है। मार्बल पत्थर और ग्रेनाइट को काटने के दोरान निकलने वाले पाउडर को स्लेरी कहते है। जिस भी जगह इस स्लेरी को डाला जाता वंहा पेड़ पोधे नष्ट हो जाते और भूमि बंजर हो जाती है इसलिए मार्बल एसोसिएशन द्वारा स्लेरी डालने के लिए एक जगह निर्धारित की गयी जिसे डंपिंग यार्ड के नाम से जाना जाता है। इस पर फोटो सूट और देशी विदेशी फिल्मों के छाया चित्र बनाए जाते है। 2001 की जनगणना के अनुसार किशनगढ़ की कुल जनसंख्या 116,156 लगभग थी, जिसमें 53% पुरुष एवं 47% महिलाएँ शामिल थीं। किशनगढ़ की औसत साक्षरता दर 62% थी जो राष्ट्रीय औसत 59.5% से अधिक थी। 2011 की जनगणना के अनुसार किशनगढ़ की जनसंख्या 1,54,889 लगभग है।

किशनगढ़ में मार्बल व्यवसाय का विस्तार और विकास

50 बरस पहले किशनगढ छोटा सा कस्बा हुआ करता था मगर मार्बल मंडी पनपने के साथ ही किशनगढ़ कस्बे का भी विस्तार तेजी से हुआ है। जिले की सारी सुविधाएं किशनगढ़ कस्बे में उपलब्ध है। मार्बल मंडी की वजह से हजारों की संख्या में लेबर अन्य राज्यों से किशनगढ़ में आकर रहती है। वर्षों से चले आ रहे मार्बल के व्यापार में काम करते हुए कई लोग यहीं बस गए हैं। वर्तमान में राजस्थान सहित मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार व बंगाल के करीब 20 से 30 हजार मजदूर भी काम करते हैं। मार्बल एसोसिएशन से मिले आंकड़ों के मुताबिक यहां 303 गैंगसा यूनिट, 223 ग्रेनाइट यूनिट, 36 गैंगसा और ग्रेनाइट यूनिट, 524 ऐज कटर, 2401 सप्लायर, 34 क्रेशर, 28 हैंडीक्राफ्ट, 42 पोलिस मशीन है। मार्बल ग्रेनाइट का निर्यात पहले ज्यादातर चाइना में होता था लेकिन अब व्यापारी यूएस, यूके, वियतनाम, मिडिल ईस्ट देश दुबई और सउदी अरब सहित अन्य देशों में भी निर्यात करने लगे हैं। इन देशों में भारतीय मार्बल ग्रेनाइट की अच्छी मांग है। वहीं कोरोना-19 के बाद चाइना, ब्राजील, इटली और टर्की में माल का उत्पादन कम होने व महंगा होने के कारण देश में निर्यात कम हो गया है। इससे देश में स्थानीय मार्बल व ग्रेनाइट की डिमांड बढ गई है। ऐसे में बढ़ी मांग का फायदा किशनगढ़ की मार्बल मंडी को हुआ। किशनगढ़ में मार्बल मंडी स्थापित करने में आर.के. मार्बल उधोग का विशेष योगदान रहा है। आर.के. मार्बल का मार्बल प्रोडक्शन में गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज है।

"Every year, the marble Industry is shrinking due to tiles. It has already decreased by 20-25 percent in recent year"

Vishesh Patni, Vice president of sales operations, Asian Marvels.

किशनगढ़ मार्बल मंडी का रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में योगदान

मार्बल मंडी के पूर्व अध्यक्ष सुरेश टांक के अनुसार किशनगढ़ मार्बल मंडी से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 1 लाख से भी अधिक लोगों को रोजगार मिलता है। यहां केवल राजस्थान ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों से आकर भी लोग रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। लेबर, ट्रांसपोर्ट, हैंडीक्राफ्ट सहित सैकड़ों तरह के छोटे बड़े व्यापार किशनगढ़ मार्बल सिटी की वजह से पनप रहे हैं। किशनगढ़ मार्बल मंडी से प्रतिदिन 500 गाड़ियां मार्बल की लोड होकर देश के अन्य राज्यों में जाती है। मार्बल ग्रेनाइट को लाने व ले जाने के काम में आने वाले वाहनों के मालिक, चालक आदि का रोजगार भी इससे जुड़ा है।

चित्र 1: मार्बल क़टर

किशनगढ़ के मार्बल का उपयोग

दुनिया में सबसे लोकप्रिय मार्बल, किशनगढ़ मार्बल अपने नाटकीय रूप और थोड़ी कोमलता के साथ महसूस के लिए प्रसिद्ध है। यह सबसे प्रसिद्ध डिज़ाइन और साइज़ में उपलब्ध है जिसका उपयोग बाथरूम की दीवारों, किचन वर्कटॉप, बैकस्प्लैश, फ़्लोर और बहुत कुछ के लिए किया जाता है। इंटीरियर डेकोर के लिए सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले मार्बल का उपयोग करने की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है, जिसके लिए किशनगढ़ मार्बल स्लैब खरीदने के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। मार्बल के उपयोग विभिन्न प्रकार की रचनात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है जिसमे से खास है- मार्बल के मंदिर, तुलसी पोर्ट, मोबाइल स्टेंड, रसोई घर के सामान आदि।

चित्र 2: मार्बल मंदिर

मार्बल व्यवसाय की चुनौतियाँ

किशनगढ़ मार्बल मंडी के सामने सबसे बड़ी चुनौती आर्टिफिशियल मेटेरियल और विट्रीफाइड टाइल्स से मिल रही है। प्राकृतिक रूप से मिलने वाले मार्बल और ग्रेनाइट के व्यापार में कोई निराशा और हताशा नहीं है।

सरकार से मार्बल व्यवसाय को निम्न सहायता की दरकार

केंद्र व राज्य सरकार को मार्बल और ग्रेनाइट के कारोबार पर विशेष छूट देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि वर्तमान में 18 प्रतिशत जीएसटी मार्बल और ग्रेनाइट की खरीद पर है। केंद्र सरकार यदि मार्बल और ग्रेनाइट से 6 प्रतिशत जीएसटी भी कम करती है, तो इस व्यवसाय को बड़ा फायदा होगा। मार्बल व्यवसाय केंद्र और राज्य सरकार को करोड़ों रुपये की रॉयल्टी और जीएसटी देने वाला उद्योग है। माइनिंग एरिया को विस्तार देने में सरकार को छूट प्रदान करनी चाहिए तथा साथ ही रॉयल्टी की दरें भी कम करके उद्योग को राहत देनी चाहिए।

निष्कर्ष

किशनगढ़ मार्बल मंडी के रूप में बनकर उभरा है। बेरोजगारी को नियंत्रित करने में इस व्यवसाय ने बड़े स्तर पर कार्य किया है। सरकार द्वारा मार्बल व्यवसाय में सहायक कदम उठाने पर सम्भव है कि यह व्यवसाय अर्थव्यवस्था को विकसित करने में बहुत बड़ा केंद्र बन सकता है । मार्बल का उपयोग बाथरूम की दीवारों, किचन वर्कटॉप, बैकस्प्लैश, फ़्लोर और बहुत कुछ के लिए किया जाता है। इंटीरियर डेकोर के लिए सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले मार्बल का उपयोग करने की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है, जिसके लिए किशनगढ़ मार्बल स्लैब खरीदने के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। मार्बल के उपयोग से विभिन्न प्रकार की रचनात्मक वस्तुओ का निर्माण किया जाता है जिसमें यह खास है- मार्बल के मंदिर, तुलसी पोर्ट, मोबाइल स्टेंड इत्यादी। वर्तमान में मार्बल व्यवसाय की स्थिति को देखते हुए ये स्पष्ट है कि यह व्यवसाय हर प्रकार से लाभ देने वाला व्यवसाय बस आवश्यकता है इसकी चुनौतियों को समझकर उसे सुधारने की। मार्बल के छोटे पथरों से सेरेमिक टाइल बनाई जाती हैं।

सन्दर्भ

1. वर्मा, कीर्ति: 'राजस्थान के ग्रेनाईट मार्बल की चमक पुरे देश में, किशनगढ़ में 371 ट्रक प्रतिदिन डिमांड, राजस्थान पत्रिका न्यूज, बाँसवाड़ा, 12 जून 2023.
2. Kumar, Nitin: Tiles cementing market in India's famous marble heartland KishanGarh, Business Standard News, 25th April 2024.
3. R.K. Marble Udhoyag, KishanGarh factory, we have interviewed and surveyed, March 2024 to July 2024.
4. Rana Bai Marble factory we have interviewed and asked all workers this factory exported marble at western countries.
5. Mining Department of state of Rajasthan Udaipur.
6. Department of Geology, University of Rajasthan, Jaipur.
7. Sharma, O.P.: Marble stone and worker condition thesis awarded by Rajasthan University, Jaipur.